इकाई 1 हिंदी की लिपि और वर्तनी का परिचय

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 भाषा और लिपि

1.2.1 लिपि से फायदे

1.2.2 लेखन की विधि

1.3 देवनागरी लिपि

1.3.1 वर्णों का मानक रूप

1.3.2 लेखन की कठिनाइयाँ

1.3.3 वर्तनी

1.4 वर्तनी के कुछ नियम

1.5 सारांश

1.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.7 अभ्यासों के उत्तर

अनुकार्य

1.0 उद्देश्य

आप हिंदी के आधार पाठ्यक्रम की पहली इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इस इकाई में हम आपको हिंदी की लिपि और वर्तनी का परिचय दे रहे हैं।

इस इकाई को पढ़कर आप:

- भाषा प्रयोग में लिपि के लाभों को बता सकेंगे;
- भाषा प्रयोग में लिपि के लाभों को समझ सकेंगे;
- लिपि का स्वरूप स्पष्ट कर सकेंगे;
- देवनागरी लिपि को समझ कर मानक वर्णों का इस्तेमाल कर सकेंगे;
- संयुक्त वर्णों को सही लिख सकेंगे;
- मानक हिंदी वर्तनी के नियमों को अपना सकेंगे और वर्तनी संबंधी दोषों को दूर कर सकेंगे; और
- लेखन की कठिनाइयों को दूर कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

हम सब हिंदी भाषा बोलते और लिखते हैं। इन दोनों माध्यमों से एक दूसरे से विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। जो बातें हम मौखिक या उच्चरित रूप से करते हैं, उन्हें हम लेखन द्वारा भी प्रकट करते हैं। यह कैसे संभव होता है? उच्चारण और लेखन में हम कैसे तालमेल बिठाते हैं? लिपि के माध्यम से हम उच्चरित भाषा को कागज पर मूर्त रूप देते हैं। लिपि

और उच्चारण भाषा के आवश्यक उपकरण हैं। भाषा को अच्छी तरह सीखने के लिए इनकी समुचित जानकारी आवश्यक है। इकाई 1 में हम लिपि का परिचय प्राप्त करेंगे और इकाई 2 में उच्चारण संबंधी विशेषताओं की चर्चा करेंगे।

आपने देखा होगा कि लोग एक ही वर्ण को भिन्न-भिन्न प्रकार से लिखते हैं। कोई "भ" लिखता है, कोई 'भ'। हम क्या और कैसे लिखें? कौन-सा सही है? इसकी समुचित जानकारी भाषा शिक्षण के लिए आवश्यक है। वर्णों के लेखन की विविधता को समाप्त करने के लिए, जिससे टंकण, मुद्रण आदि में एकरूपता लाई जा सके, भारत सरकार ने इसके लिए मानक देवनागरी लिपि का सुझाव दिया है। साथ ही वर्तनी के कुछ नियम भी निर्धारित किए हैं। इनका पालन करने पर लिपि में एकरूपता आएगी और सीखना-सीखाना दोनों आसान होगा।

शब्द का लिखित रूप उसकी वर्तनी कहलाता है। आपने देखा होगा कि अधिकतर लोग वर्तनी की गलतियाँ करते हैं। "परीचय","लिपी","समापत", "उचचारण","हिन्दी", "बर्ण", "मूद्रण" आदि गलत रूप हैं। आप भी ऐसी गलतियाँ करते होंगे, तो आप सोचते होंगे कि इन दोषों से बचा कैसे जाए। कुछ नियम हैं जिनमें हम वर्तनी के दोषों को कुछ हद तक पकड़ सकते हैं। लेकिन सबसे बड़ा नियम है कि हम सही उच्चारण को पहचानें, सही उच्चारण करें। इस इकाई में तथा आगे की ईकाइयों में आपको वर्तनी के बारे में और जानकारी दी जाएगी।

कुछ शब्द दो तरह से लिखे जाते हैं और दोनों रूप सही माने जाते हैं जैसे "गरम","गर्म"। इन शब्दों के बारे में भी हमें जानना होगा। आइए, अब हम पाठ प्रारंभ करें, जिसमें ऊपर उठाई गई समस्याओं के संदर्भ में लिपि, मानक देवनागरी लिपि, वर्तनी आदि के बारे में सही जानकारी प्राप्त करें।

1.2 भाषा और लिपि

आप यह पाठ पढ़ना शुरू कर रहे हैं। आपके सामने मैं नहीं हूँ, फिर भी लगता है मैं आपसे बात कर रहा हूँ। आप मेरी बातों को समझ रहे हैं, जैसे सामने बैठे सुन रहे हों। यह कैसे संभव हुआ है? आप भाषा के लिखित रूप को पढ़ रहे हैं। आपके सामने छपे हुए ये अक्षर हैं। इन्हीं अक्षरों से आप भाषा के उच्चरित रूप को पहचान रहे हैं और अर्थ ग्रहण कर रहे हैं। इस तरह हम लिपि के माध्यम से भी एक दूसरे से "बातचीत" कर सकते हैं, जैसे बोलकर अपने भावों को अभिव्यक्ति देते हैं। अतः आप मान सकते हैं कि पढ़ना सुनने का दूसरा रूप है।

लिपि के महत्व पर विचार करने से पूर्व हमें भाषा के महत्व पर भी विचार कर लेना चाहिए। भाषा वह माध्यम है, जिसपर मानव समाज का बहुमुखी विकास निर्भर करता है। आप को यह जानकर आश्चर्य होगा कि भाषा के बिना मनुष्य सोच भी नहीं सकता। उसका सम्पूर्ण चिन्तन उसकी मातृ भाषा में होता है। लेकिन भाषा, उसमें चिन्तन और विकास की आधारभूमि लिपि है। लिपिबद्ध भाषा या लेखन कला के उद्भव से ही भाषा का चरम विकास संभव हो सका है।

1.2.1 लिपि से फायदे

लिपि के विकास से पहले मनुष्य सिर्फ बोलता था, वह लिखता नहीं था। सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ लिखना प्रारंभ हुआ। पहले मनुष्य ताड़ के पत्तों या भोज़पत्र पर लिखता था। कुछ लोग गीली मिट्टी पर या पत्थरों पर लिखते थे। कहीं-कहीं धातु पटल पर लिखने का प्रमाण मिलता है। सभ्यता के आरंभ में लिखना बहुत कठिन काम था। इसलिए प्राचीन काल में इसका अधिक प्रचार नहीं हुआ था। संसार में कम भाषाएँ लिखी जाती थीं। मध्य युग में कागज़ का उत्पादन आरंभ हुआ और छपाई का प्रचलन हुआ। तब से लिखने का व्यापक प्रचार हुआ है। अब हम कोशिश कर रहे हैं कि सभी लोग लिखना-पढ़ना सीखें। जिसे लिखना-पढ़ना नहीं आता उसे हम अशिक्षित कहते हैं। ऐसा क्यों? लिखने-पढ़ने से ही

ज्ञान का विस्तार हो सकता है। हम यह भी देखते हैं कि जो भाषाएँ लिखी जाती हैं, वे ही प्रगति प्राप्त करती हैं, उनको बोलने वाला समाज उन्नति करता है। आप जानना चाहेंगे कि लिपि से समाज के विकास का क्या संबंध है?

1) लिपि का सबसे बड़ा गुण है विचार को सुरक्षित रखते हुए उसे समय से आगे बढ़ाना। हम बोलते हैं तो बात खत्म हो जाती है। लिखने पर उसे स्थायित्व मिल जाता है। लिखे हुए अक्षर ध्वनि की तरह मिट नहीं जाते। हम अपने विचारों को खुद बाद में पढ़ सकते हैं और आगे के लेखन में भाषा के विकास के साथ ही विचारों में भी विकास होता है। इस कारण हम अधिक व्यवस्थित रूप से लिखते हैं, थोड़े शब्दों में सारी बात को रखने का यत्न करते हैं। बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा के स्वरूप में अंतर है। इसके बारे में हम आगे के पाठों में विस्तार से पढ़ेंगे। यहाँ हम इतना तो कह ही सकते हैं कि लिखने से भाषा के विकास के साथ ही चिंतन का भी विकास होता है।

2) लिपिबद्ध भाषा के माध्यम से कहे हुए विचार सुरक्षित रखे जा सकते हैं। इसी कारण हमारे पास पुराने ज़माने की कृतियाँ सुरक्षित हैं, उस समय का ज्ञान-विज्ञान सुरक्षित है। ये विचार पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमारी विरासत बन कर हमारे वर्तमान ही नहीं, भविष्य के सामाजिक विकास में भी प्रेरक और सहायक बनते हैं। अतः मानव समाज की सभ्यता, संस्कृति उसके ज्ञान-विज्ञान के विकास में लिपि की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

3) लिपि के माध्यम से हम संप्रेषण का विस्तार कर सकते हैं। आप बोलेंगे, तो ज्यादा से ज्यादा कुछ हजार लोग आपको सुन सकेंगे। लेकिन अख़बार में लिखें तो शायद लाखों लोग आपको "सुन" सकेंगे। भारत के ही नहीं दुनिया के कोने-कोने में बैठे हुए लोग आपके विचार जान सकेंगे। लेखन से आने वाली पीढ़ियाँ भी आपके विचार जान सकेंगी और अपने भावी विकास में उसका उपयोग कर सकेंगी।

1.2.2 लेखन की विधि

लेखन क्या है? लिपि क्या है? हम जिस क्रम में ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उसी क्रम में उन्हें पूर्व निश्चित आकारों के माध्यम से दिखाना ही लिपि है। अर्थात् लिपि में उच्चरित ध्वनियों के लिए चिह्न निश्चित करते हैं। इन चिह्नों को वर्ण कह सकते हैं। जैसे वर्ण "प" एक ध्वनि का प्रतीक है, इसी तरह "ब" किसी दूसरी ध्वनि का। शब्द "काल" में तीन ध्वनियाँ हैं — क् , आ, ल्। लेखन में भी हम तीन वर्णों से इस क्रम को दिखाते हैं। किसी भाषा की वर्णमाला उस भाषा की सभी ध्वनियों के प्रतीकों की व्यवस्था होती है। हिंदी भाषा की वर्णमाला की लिपि देवनागरी लिपि कहलाती है। यह लिपि हिंदी की ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करती है।

ऐसा नहीं कि सारी भाषाओं में एक जैसी लिपि-व्यवस्था हो। देवनागरी लिपि बायीं ओर से दायीं ओर लिखी जाती है। अरबी भाषा की लिपि में लेखन दायें से बायें चलता है। जापानी भाषा में वर्ण ऊपर से नीचे के क्रम में लिखे जाते हैं। चीनी भाषा में ध्वनियों के अलग संकेत नहीं होते, बल्कि पूरा शब्द एक तस्वीर की तरह होता है, जिसे चित्र लिपि कहते हैं। इन भिन्नताओं के बावजूद हम कह सकते हैं कि लिपि रेखाओं और आकारों के माध्यम से उच्चरित भाषा का संकेत करती है।

देवनागरी लिपि का पूर्ण परिचय प्राप्त करने से पूर्व आपके लिए रोमन लिपि के लेखन से उसकी तुलना उपयोगी हो सकती है। क्योंकि आप में से अधिकांशतः रोमन लिपि से परिचित होंगे। देवनागरी लिपि में प्रायः शब्दों के आदि और अंत को छोड़कर व्यंजनों के साथ स्वर के स्थान पर केवल मात्राओं का प्रयोग होता है, जबकि रोमन में सर्वत्र शब्दों में व्यंजन और स्वर का प्रयोग अनिवार्य है। जैसे - कामता प्रसाद = KAMTA PRASAD । देवनागरी का यह शब्द क् + आ + म् + त + आ + प् + र् + स् + आ + द + अ वर्णमाला की 11 ध्वनियों से निर्मित है। लेकिन व्यंजनों के साथ मात्राओं के उपयोग से यह शब्द अत्यंत संक्षिप्त हो गया है। जबकि रोमन में वर्णमाला की ग्यारह ध्वनियों का प्रयोग करने के कारण

अधिक सुगम, संक्षिप्त और वैज्ञानिक लिपि है।

आपने अभी लिपि की उत्पत्ति और उसके महत्व के बारे में जाना। अब नीचे दिए गए अभ्यासों का उत्तर देने की कोशिश कीजिए।

अभ्यास

1) नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं जो कथ्य की दृष्टि से सही या गलत हैं। बताइए, कौन से वाक्य सही हैं कौन से गलत?

   1) आदमी ने बोलना पहले सीखा, लिखना बाद में। ( ) सही ( ) गलत

   2) भोजपत्रों का उपयोग छपाई के लिए होता था। ( ) सही ( ) गलत

   3) लिपि से विचारों को स्थायित्व मिलता है। ( ) सही ( ) गलत

   4) बोलचाल की भाषा और लिखने की भाषा के स्वरूप में कोई अंतर नहीं होता। ( ) सही ( ) गलत

   5) विचार को समय से आगे बढ़ाना लिपि का सबसे बड़ा गुण है।( ) सही ( ) गलत

   6) मानव के सांस्कृतिक विकास में लिपि का कोई योगदान नहीं है। ( ) सही ( ) गलत

   7) लिपि के माध्यम से संप्रेषण का विस्तार होता है। ( ) सही ( ) गलत

   8) अरबी लिपि बायीं से दायीं ओर लिखी जाती है। ( ) सही ( ) गलत

   9) मानव के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास में लिपि का कोई योगदान नहीं है। ( ) सही ( ) गलत

   10) व्यक्ति का सम्पूर्ण चिन्तन उसकी मातृभाषा में होता है ( ) सही ( ) गलत

2) नीचे लिखे वाक्यों के साथ कोष्ठक में दिये गये उत्तरों में से कोई एक उत्तर सही है। जो सही उत्तर हो उसे रिक्त स्थान में लिखिए।

   1) भाषा में उच्चरित ध्वनियों के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं उन्हें.....कहते हैं। (शब्द/वर्ण/वर्तनी)

   2) हिंदी की लिपि.....कहलाती है। (हिंदी/देवनागरी)

   3) जापानी भाषा में वर्ण.....लिखे जाते हैं। (ऊपर से नीचे की ओर/दायें से बायें/बायें से दायें)

   4) मानक लिपि से भाषा में.....आती है। (एकता/एकरूपता)

   5) किसी भी भाषा की वर्णमाला उस भाषा.....के प्रतीक होते हैं। (के शब्दों/की ध्वनियों)

1.3 देवनागरी लिपि

1.3.1 वर्णों का मानक रूप

आप हिंदी के कुछ छपे हुए शब्दों को देखिए:

आना धोना भागना खाना छूना

अाना धोना भागना रवाना छूना

आपने देखा कि कई वर्ण दो प्रकार से लिखे जाते हैं। हिंदी का क्षेत्र अत्यंत विशाल है। इस कारण कुछ वर्णों के लेखन में विविधता का होना स्वाभाविक है। लेकिन इससे मुद्रण में कठिनाई होती है। लोगों को सीखने-सिखाने में भी कठिनाई होती है। टंकण-यंत्र (टाइप मशीन) का निर्माण असंभव हो जाता है। टंकण-यंत्र की सीमित कुंजियों में आप सारे दुहरे वर्णों को दिखा नहीं सकते। इसी कारण भारत सरकार ने केंद्रीय हिंदी निदेशालय को मानक देवनागरी लिपि निर्धारित करने का कार्य सौंपा। इसका उद्देश्य यह था कि हम निश्चित करें कि आगे से कौन-कौन से वर्ण मानक होंगे और कौन-कौन से अमानक। इस कार्य के पीछे यह उद्देश्य था कि लोग मानक वर्णों का ही प्रयोग करें, जिससे भाषा में एकरूपता आये। निदेशालय ने 1966 में मानक देवनागरी लिपि प्रस्तुत की। आगे हम इस मानक लिपि का परिचय प्राप्त करेंगे।

हिंदी निदेशालय के निर्धारित मानक वर्ण :

अ ऋ ख छ झ ण ध भ ल श क्ष

मानक वर्णों के साथ प्रयुक्त अन्य अमानक वर्ण :

अ ऋ रव छ झ ण ध भ ल श क्ष

यहाँ हम मानक देवनागरी वर्णमाला दे रहे हैं।

मानक देवनागरी वर्णमाला

स्वर : अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

मात्राएँ : ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

अनुस्वार : (अं)

विसर्ग : (अः)

व्यंजन :

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	

संयुक्त व्यंजनः क्ष त्र ज्ञ श्र

1.3.2 लेखन की कठिनाइयाँ

अब हम लेखन की कुछ कठिनाइयों की बात करेंगे। आप निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए।

पद्मा, उद्यान, द्वारा, उद्देश्य, उद्धार, उद्गार ।

क्या आपने सारे शब्द पढ़ लिये? न पढ़ सके हों, तो चिंता नहीं। क्योंकि ये वर्ण छपाई में कम होते जा रहे हैं। पहले की पुस्तकों में ऐसे शब्द ज्यादा छपते थे। लेकिन आधुनिक छपाई की मशीनों में इनके छपने की गुंजाइश कम है।

"द्म" दो वर्णों का योग है — द् + म। इन दोनों के मिलने से एक तीसरा रूप बन जाता है। इसी सिलसिले में हम एक और प्रक्रिया की चर्चा करेंगे। यह है सरलीकरण। आगे के शब्दों को देखिए :

पद्मा, उद्यान, द्वारा, उद्देश्य, उद्धार, उद्गार। हमने यहाँ हलंत (्) चिह्न का प्रयोग किया, जिससे छह तरह के संयुक्त वर्णों के लेखन से बच गये। "द्म" (या द्म) संयुक्त वर्ण कहलाते हैं। हिंदी निदेशालय ने संयुक्त वर्ण बनाने के संबंध में भी अपने कुछ सुझाव दिये हैं। इससे लेखन-विधि, मुद्रण आदि सरल हो जाते हैं।

संयुक्त वर्ण बनाने की विधिः सबसे पहले हम यह कहेंगे कि पुराने वर्णों अर्थात् अमानक वर्णों से संयुक्त वर्ण नहीं बनेंगे। इसलिए मुख्य, पुराय, सभ्य, विश्व, मल्ल आदि शब्दों का रूप अमानक होगा।

नये (मानक) वर्णों से संयुक्त व्यंजन बनाने के संदर्भ में तीन बातें हैं:

क) र, ऋ के रूप पूर्ववत् होंगे। अर्थात् इनसे बनने वाले संयुक्त व्यंजनों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। जैसे — क्रम, श्रम, तर्क, ड्रामा, बर्र, रुपया, रूप, हृदय, श्रृंगार। एक अपवाद है "ृ" जो पूर्व रूप 'ृ' के स्थान पर आता है।

ख) आप निम्नलिखित वर्णों को देखिए और उसमें समान तत्व पहचानिए।

क्ष स श व ल य

पहचान लिया? सबके अंत में एक खड़ी पाई है। उसे निकाल दीजिए और उसके स्थान पर दूसरा वर्ण रख दीजिए। संयुक्त वर्ण बन गया। उदाहरण देखिए — मुख्य, ग्यारह, विघ्न, प्राच्य, राज्य, पुण्य, पत्ता, तथ्य, ध्यान, न्याय, प्यार, ब्याह, अभ्यास, म्यान, मल्ल, द्रव्य, श्याम, शिष्य, स्याही, लक्ष्य।

ग) अब वर्ण क और फ़ से संयुक्त वर्ण बनाने के लिए इनकी आखिरी रेखा थोड़ी काट दें, तो संयुक्त वर्ण बन जाएँगे। जैसे क, प - मुक्त, हफ्ता।

घ) अब कुछ वर्ण और बचे हैं।

छ ट ठ ड ढ द ह

आप सुझा सकते हैं कि इनका रूप कैसे बनेगा? ऊपर हमने "पद्मा" के लिए विकल्प दिया था। वह फिर से देखिए। आपको मालूम पड़ेगा कि हलंत चिह्न लगाकर आप इनके संयुक्त वर्ण बना सकते हैं। जैसे, उच्छ्वास, नाट्यशास्त्र पाठ्यक्रम, धनाढ्य, पद्म, चिह्न।

1.3.3 वर्तनी

अब हम सरलीकरण की ही प्रक्रिया के संदर्भ में वर्तनी की चर्चा करेंगे।

निम्नलिखित शब्द की वर्तनी के चार रूप हैं — संबंध, सम्बन्ध, संबन्ध, सम्बंध।

आपको मुद्रण में ये चारों ही रूप मिलेंगे। इससे सीखने वालों को कठिनाई भी होती है। यहाँ एकरूपता लाने की आवश्यकता है।

हिंदी निदेशालय ने सलाह दी है कि पंचम वर्ण को उस वर्ग के पहले चार वर्णों से पहले अनुस्वार से दिखाया जाए। जैसे न को त, थ, द, ध से पहले यों लिखा जाए :

मानक रूप	अंत	पंथ	बंद	अंधा
पूर्व रूप	अन्त	पन्थ	बन्द	अन्धा

इस तरह के अन्य कुछ उदाहरण भी देखे जा सकते हैं जो अन्य नासिक्य व्यंजनों के साथ आते हैं :

संबंध	हिंदा	टंकण	चंचल	गंगा	मंत्री
झंडा	झंझा	संभव	पंछी	संघ	कंठी

इस पद्धति से भाषा में एकरूपता आएगी, लिखने में सरलता आएगी।

लेकिन आपको ध्यान रखना चाहिए कि नासिक्य व्यंजनों के बाद उस वर्ण के पहले चार वर्णों के अलावा और कोई वर्ण आएगा तो नासिक्य व्यंजन का आधा रूप लिखा जाएगा, अनुस्वार नहीं। इस नियम के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के सही रूप और गलत रूपों को देखिए :

सही रूप		गलत रूप
पुण्य	ण + य	पुंय
गन्ना	न + न	गंना
साम्य	म + य	सांय
निम्न	म + न	निंन
सम्राट	म + र	संराट

अभ्यास

3) नीचे देवनागरी के कुछ वर्ण दिये गये हैं, इनके मानक रूप लिखिए।

1) अे	5) झ
2) छ	6) ण
3) श	7) अ
4) भ	8) घ

4) नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, इनमें वर्ण अमानक या पुराने ढंग से लिखे गये हैं। मानक वर्णों का प्रयोग करते हुए शब्दों को दुबारा लिखिए।

1) दृश्य	6) शक्ति
2) शाश्वत	7) भक्त
3) झण्डा	8) गङ्गा
4) दिव्य	9) निबन्ध
5) चिह्न	10) लक्ष्य

5) आगे के शब्दों को सही वर्तनी में लिखिए।

1) पन्डित	4) सम्बंध

2) संमार्ग 5) संमान

3) कन्चन 6) अंनदाता

1.4 वर्तनी के कुछ नियम

शब्द का लिखित रूप उसकी "वर्तनी" कहलाता है। इसी को हम "हिज्जे" भी कहते हैं। जैसे "किताब" सही वर्तनी है, "कीताब" गलत वर्तनी। हमें शब्दों को सही वर्तनी में लिखना चाहिए, तभी वाक्य का सही अर्थ निकलेगा। जैसे "मैं फल खा रहा हूँ" में "पल" लिखेंगे, तो वाक्य निरर्थक होगा। यहाँ हम वर्तनी की कुछ विशेष बातें देखेंगे, आगे की इकाइयों में वर्तनी के और अभ्यास करेंगे।

आपने देखा कि मानक वर्णमाला में हमने चंद्रबिंदु (ँ) को नहीं दिखाया। निम्नलिखित दोनों शब्दों में वर्तनी में अंतर है, उच्चारण में अंतर है और अर्थ में अंतर है:

हंस — एक पक्षी, हँसना — एक क्रिया व्यापार

हमें दोनों के प्रयोगों को समझना होगा।

चंद्रबिंदु (अनुनासिकता) : इसे हम चिह्न (ँ) से दिखाते हैं। जैसे

हँसना, आँख, पूँछ, बूँद, दाँत, ऊँट, पाँ, दायाँ, बायाँ, लड़कियाँ। लेकिन जब अनुनासिकता को हम ऊपर वाले वर्णों के साथ लिखेंगे, तो उसे अनुस्वार (.) से लिखते हैं। जैसे

गेंद, ईंट, औंधा, गोंद, पैंसठ, कहीं, दोनों।

आपको अनुस्वार (ं) अनुनासिक (ँ) के अंतर को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। अनुस्वार वर्णमाला के पंचमाक्षर ङ., ञ, ण, न, म के लिए प्रयुक्त होते हैं। जब कि अनुनासिक नाक से निकलने वाली ध्वनि मात्र है। अनुस्वार के सभी रूपों के लिए मुद्रण-टंकण में प्रायः (ं) चिह्न का प्रयोग होने लगा है — जैसे क्रांति (क्रान्ति), शांति (शान्ति)। लेकिन भाँति, पाँति को भान्ति, पान्ति भी लोग लिख देते हैं, जो गलत है। अतः इसके समाधान के लिए आप स्वयं उच्चारण करके वर्तनी निर्धारित करें।

ऐसे स्थलों पर हमें वर्तनी और उच्चारण दोनों बातों को साथ लेकर चलना होगा। अगली इकाई में हम उच्चारण के बारे में और विचार करेंगे।

वर्णमाला में हमने "ड़ " और "ढ़" को भी नहीं दिखाया है, जबकि किसी मुद्रित पुस्तक में आप देखेंगे कि हर जगह इनसे बनने वाले शब्दों को इसी रूप में दिखाया जाता है। इसे हम वर्तनी के स्तर पर कैसे दिखाएँ?

आगे के विवरण देखिए :

ड — शब्द के आरंभ में — डालना, डोली, डूबना

व्यंजन गुच्छ में — खड्ग, कार्ड, गुड्डी

अनुस्वार के बाद — पंडित, कांड

उपसर्ग के बाद — नि + डर = निडर, बे + डौल = बेडौल

ड़ — और सभी जगहों में, जैसे

लड़का, पेड़, बड़बड़, लड़की, साँड़, जड़ता

इस नियम की जानकारी होने पर वर्तनी के दोष दूर किये जा सकते हैं। इसी नियम से ढ और ढ़ के लेखन को भी पहचान सकते हैं।

अनुस्वार और अनुनासिक की तरह हिन्दी में ड़ और ढ़ को लेकर भी काफी भ्रम है। हिन्दी की ये नयी ध्वनियां हैं जो 'ट' वर्ग के 'ड' और 'ढ' से मिलती हैं। 'डर' को 'ड़र' और गढ़ को गढ लिख देने की गलती प्रायः देखी जाती है। पेड़ा और पेडा, पढ़ाई और पढाई में उच्चारण के अन्तर को स्वयं बोल कर समझें।

आप यह सवाल कर सकते हैं कि वर्तनी के सभी दोषों को दूर करने का क्या उपाय है? जैसे ह्रस्व-दीर्घ स्वरों के दोषों को कैसे दूर करें। हम अगली इकाई में विस्तार से देखेंगे कि वर्तनी के बहुत-से दोषों का कारण उच्चारण है। उच्चारण सही हो, तो वर्तनी भी ठीक होगी। यह हिंदी भाषा की विशेषता है कि अधिकतर हम वही लिखते हैं, जो हम बोलते हैं। इसलिए ह्रस्व-दीर्घ स्वरों का उच्चारण सही करें, तो वर्तनी सही लिख सकते हैं। दिन-दीन में उच्चारण का अंतर है, जाति-जाती में उच्चारण का अंतर है। इन शब्दों के लिए कोई नियम देना संभव नहीं है। हाँ, शब्द-रचना में कुछ नियम ढूँढ सकते हैं। जैसे,

लड़की - लड़कियाँ
आदमी - आदमियों

लेकिन ऐसे नियम कम ही हैं। अतः इनके सही उच्चारण से ही वर्तनी सुधर सकती है।

यहाँ हम लिपि के आधार पर कुछ वर्णों की वर्तनी की चर्चा करेंगे। भाषा में शब्द कई स्रोतों से आते हैं, वे अपने उच्चारण के साथ आते हैं। अगर आप शब्द के स्रोत को पहचान सकें, तो वर्तनी को निश्चित कर सकेंगे। जैसे हिंदी में संस्कृत से आये शब्द आते हैं - कार्य, रक्षा, अध्ययन, वास्तविक, उद्योग आदि। अरबी-फ़ारसी स्रोत से आये (उर्दू के) शब्द हैं — मालूम, फ़ायदा, नक़ल, उम्र, मदरसा आदि। अंग्रेजी से आये शब्द हैं - सांइकिल, रेल, डॉक्टर, टेलीफ़ोन आदि। शब्दों के स्रोत के बारे में हम आगे की इकाइयों में पढ़ेंगे। यहाँ हम इन शब्दों की वर्तनी की कुछ विशेषताओं की चर्चा करेंगे।

1) केवल संस्कृत शब्दों में ऋ, ष, क्ष, ज्ञ, ण, विसर्ग (:) आदि वर्ण मिलते हैं। इसलिए उर्दू या अंग्रेजी शब्दों में क्ष नहीं आएगा, बल्कि "क्श" आएगा। जैसे रिक्शा, डिक्शनरी, नक्शा आदि। संस्कृत शब्दों में (जैसे रक्षा, शिक्षित आदि में) "क्श" नहीं आ सकता।

2) केवल संस्कृत शब्दों में शब्द के अंत में ह्रस्व स्वर इ, उ आते हैं। जैसे, जाति, गति, तिथि, अस्थि, वायु, आयु आदि। किसी उर्दू या अंग्रेजी शब्द के अंत में ह्रस्व स्वर इ, उ नहीं आते।

3) क़, ख़, ज़, फ़, ग़ अरबी-फारसी शब्दों में आते हैं। इसलिए बाक़ी, राज़ी, बाग़ी, गुफ्तगू आदि दीर्घ अंतिम स्वर से ही लिखे जाएँगे। अंग्रेजी से आये शब्दों में ऑ, ज़, फ़, को देख सकते हैं, जैसे — डॉक्टर, जू, फ़ोन आदि।

4) संस्कृत के कुछ शब्दों में अंतिम स्थान पर "म" के उच्चारण के लिए अनुस्वार लिखा जा सकता। जैसे - एवं, स्वयं, अहं, परं। अन्य शब्दों में हम "म" के लिए अनुस्वार नहीं लिख सकते जैसे — 'मालूम' को 'मालूं' नहीं लिख सकते।

5) कुछ शब्दों के सही और गलत हिज्जे को देखिए।

   सही — उद्धार, प्रत्येक, निर्जन, अस्वस्थ, सम्राट, नागरिक, जागरण, नरक

   गलत — उदधार, प्रतयेक, निरजन, असवस्थ, समराट, नाग्रिक, जाग्रण, नर्क

ये शब्द संस्कृत के हैं। आम तौर पर संस्कृत शब्दों में शब्दों के दो रूप नहीं मिलते। इनमें सही रूप को हम कुछ नियमों से स्पष्ट कर सकते हैं। इन नियमों को आगे की इकाइयों में अभ्यासों द्वारा सीखेंगे।

इसके विपरीत उर्दू तथा अंग्रेजी शब्दों में कई जगह वर्तनी के दो रूप मिलते हैं और दोनों सही माने जा सकते हैं। जैसे, शर्म/शरम, बिलकुल/बिल्कुल, बरतन/बर्तन, उमर/उम्र, खयाल/ख्याल, इनकार/इन्कार, सरकस/सर्कस, कालेज/कालिज, पाउडर/पावडर आदि। यहाँ हमारे

पास उच्चारण या शब्द रचना का कोई आधार नहीं है। इसलिए हमें दोनों ही शब्दों को सही मानना होगा।

यहाँ तक हमने अन्य स्रोतों से आये शब्दों की चर्चा की। हिंदी के अपने शब्दों में भी शब्द-निर्माण के आधार पर कुछ नियम बनाये जा सकते हैं। जैसे उलट (ना) से "उलटा" बना, यहाँ "उल्टा" लिखना गलत है। इसी तरह भर (ना) से "भरती," इसलिए "भर्ती" उचित नहीं है। हिंदी में "चिठ्ठी" "पथ्थर" जैसे शब्द गलत हैं, क्योंकि हिंदी में ठ्ठ, थ्थ जैसे संयुक्त वर्ण नहीं आते। ऐसे कुछ नियमों के अध्ययन से हम सही भाषा लिखने की ओर प्रवृत्त हो सकेंगे। लेकिन जहाँ नियम नहीं बन सकते, हमें अपने उच्चारण की शुद्धता पर बल देना होगा।

अभ्यास

6) निम्नलिखित शब्दों को सही वर्तनी में लिखिए।

1)	पेड	6)	रिक्षा
2)	भठ्ठी	7)	सुरक्शा
3)	मछ्छर	8)	उददेश्य
4)	ढिठाई	9)	निरमल
5)	लडाई	10)	बुध्ध

7) नीचे शब्दों के दो-दो रूप दिये जा रहे हैं। इनमें से कुछ के दोनों रूप सही हैं और कुछ में एक सही है। सही शब्द/शब्दों पर (√) चिह्न लगाइए।

1)	तीवर/तीव्र	5)	अक्ल/अकल
2)	इन्सान/इनसान	6)	शिक्षण/शिक्शण
3)	पथ्थर/पत्थर	7)	घड़ीयाँ/घड़ियाँ
4)	मुर्गियाँ/मुर्गीयाँ	8)	गरम/गर्म

1.5 सारांश

- हमने इस इकाई में पढ़ा कि हिंदी की लिपि देवनागरी लिपि कहलाती है। सभी भाषाओं में लिपि भाषा के उच्चरित रूप का प्रतिनिधित्व करती है। हम ध्वनियों को अलग-अलग चिह्नों से दिखाते हैं। ये चिह्न वर्ण कहलाते हैं। हमने हिंदी की वर्णमाला का परिचय प्राप्त किया।

- हिंदी लिपि में कई वर्ण अलग-अलग ढंग से लिखे जाते हैं। भारत सरकार की संस्था केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने देवनागरी लिपि को मानक रूप प्रदान किया। मानक रूप से सीखने-सिखाने में आसानी होगी, टंकण-मुद्रण का कार्य सरल होगा और भाषा में एकरूपता आएगी। अब आप हिंदी लिखते हुए मानक वर्णों का प्रयोग कर सकते हैं।

- भाषा के शब्दों को हम वर्णों के क्रम में लिखते हैं, तो वह वर्तनी कहलाती है। जिस भाषा में उच्चारण तथा वर्तनी में तालमेल हो तो उसे वैज्ञानिक भाषा और उसकी लिपि को वैज्ञानिक लिपि कह सकते हैं। हिंदी को इस दृष्टि से वैज्ञानिक भाषा माना जाता है, क्योंकि अधिकतर हम उच्चारण और वर्तनी में तालमेल देखते हैं। इसलिए सही वर्तनी लिखने के लिए सही उच्चारण करना आवश्यक है। वर्तनी-दोषों को पहचानने

और दूर करने के लिए कुछ शब्दों के संदर्भ में वर्तनी के नियम भी देखे जा सकते हैं। इस इकाई में ऐसे कुछ नियमों की चर्चा की गयी है।

1.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

केंद्रीय हिंदी निदेशालय नें 1983 में "देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण" पुस्तिका प्रकाशित की थी। उक्त पुस्तिका में वर्तनी तथा विराम चिह्नों के मानक लेखन के बारे में कुछ नियम दिये गये हैं, जिन्हें हम आगे दे रहे हैं। इनका अध्ययन कीजिए।

वर्तनी संबंधी अद्यतन नियम इस प्रकार हैं :

1) **संयुक्त वर्ण**

क) **खड़ी पाई वाले व्यंजन :**

खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर ही बनाया जाना चाहिए, यथा :

ख्याति, लग्न, विघ्न	व्यास
कच्चा, छज्जा	श्लोक
नगण्य	राष्ट्रीय
कुत्ता, पथ्य, ध्वनि, न्यास	स्वीकृति
प्यास, डिब्बा, सभ्य, रम्य	यक्ष्मा
शय्या	त्र्यंबक

उल्लेख

ख) **अन्य व्यंजन**

अ) **'क' और 'फ़' के संयुक्ताक्षर :**

संयुक्त, पक्का, दफ्तर आदि की तरह बनाए जाएँ, न कि संयुक्त, पक्का, दफ्तर की तरह।

आ) **ड., छ, ट, ठ, ढ, द और ह** के संयुक्ताक्षर हल चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ, यथा :

वाङ् मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा आदि।

(वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा नहीं)।

इ) संयुक्त **'र'** के प्रचलित तीनों रूप यथावत् रहेंगे। यथा :

प्रकार, धर्म, राष्ट्र।

ई) **'श्र'** का प्रचलित रूप ही मान्य होगा। इसे **'श्र'** के रूप में नही लिखा जाएगा। त् + र के संयुक्त रूप के लिए त्र और त्र दोनों रूपों में से किसी एक के प्रयोग, की छूट होगी। किंतु **'क्र'** को **'क'** के रूप में नहीं लिखा जाएगा।

उ) हल् चिह्न युक्त वर्ण बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा, न कि पूरे युग्म से पूर्व, यथा : कुट्टिम, द्वितीय, बुद्धिमान, चिह्नित आदि

(कुट्टिम, द्वितीय, बुद्धिमान, चिह्नित नहीं)

ऊ) संस्कृत में संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे, उदाहरणार्थ :

संयुक्त, चिह्न, विद्या, चञ्चल, विद्वान, वृद्ध, अङ्क, द्वितीय, बुद्धि आदि।

2) **विभक्ति-चिह्न**

क) हिंदी के विभक्ति-चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रातिपदिक से पृथक् लिखे जाएँ, जैसे— **राम ने, राम को, राम से** आदि तथा **स्त्री ने, स्त्री को, स्त्री से** आदि। सर्वनाम शब्दों में ये चिह्न प्रातिपदिक के साथ मिलाकर लिखे जाएँ जैसे— **उसने, उसको, उससे, उसपर** आदि।

ख) सर्वनामों के साथ यदि दो विभक्ति-चिह्न हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक् लिखा जाए, जैसे - **उसके लिए, इसमें से।**

ग) सर्वनाम और विभक्ति के बीच **'ही', 'तक'** आदि का निपात हो तो विभक्ति को पृथक् लिखा जाए, जैसे— **आप ही के लिए, मुझ तक को।**

3) **क्रियापद**

संयुक्त क्रियाओं में सभी अंगभूत क्रियाएँ पृथक्-पृथक् लिखी जाएँ, जैसे— **पढ़ा करता है, आ सकता है, जाया करता है, खाया करता है, जा सकता है, कर सकता है, किया करता है, पढ़ा करता था, खेला करेगा, घूमता रहेगा, बढ़ते चले जा रहे हैं** आदि।

4) **हाइफ़न**

हाइफ़न का विधान स्पष्टता के लिए किया गया है।

क) द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफ़न रखा जाए, जैसे -

राम-लक्ष्मण, शिव-पार्वती-संवाद, देख-रेख, चाल-चलन, हँसी-मज़ाक, लेन-देन, पढ़ना-लिखना, खाना-पीना, खेलना-कूदना आदि।

ख) **सा, जैसा** आदि से पूर्व हाइफ़न रखा जाए, जैसे—

तुम-सा, राम-जैसा, चाकू-से तीखे।

ग) तत्पुरूष समास में हाइफ़न का प्रयोग केवल वहीं किया जाए, जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं, जैसे— **भू-तत्व।** सामान्यतः तत्पुरूष समासों में हाइफ़न लगाने की आवश्यकता नहीं है, जैसे— **रामराज्य, राजकुमार, गंगाजल, ग्रामवासी, आत्महत्या** आदि।

इसी तरह यदि 'अ-नख' (बिना नख का) समस्त पद में हाइफ़न न लगाया जाए तो उसे 'अनख' पढ़े जाने से 'क्रोध' का अर्थ भी निकल सकता है। अ-नति (नम्रता का अभाव): अनति (थोड़ा), अ-परस (जिसे किसी ने न छुआ हो) :अपरस (एक चर्म रोग), भू-तत्व (पृथ्वी-तत्व) : भूतत्व (भूत होने का भाव) आदि समस्त पदों की भी यही स्थिति है। ये सभी युग्म वर्तनी और अर्थ दोनों दृष्टियों से भिन्न-भिन्न शब्द हैं।

घ) कठिन संधियों से बचने के लिए भी हाइफ़न का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे **द्वि-अक्षर, द्वि-अर्थक** आदि।

5) **अव्यय**

'तक', 'साथ' आदि अव्यय सदा पृथक् लिखे जाएँ, जैसे — **आपके साथ, यहाँ तक।**

इस नियम को कुछ और उदाहरण देकर स्पष्ट करना आवश्यक है। हिंदी में **आह, ओह,**

अहा, ऐ, ही, तो, सो, भी, न, जब, तब, कब, यहाँ, वहाँ, कहाँ, सदा, क्या, श्री, जी, तक, भर, मात्र, साथ, कि, किंतु, मगर, लेकिन, चाहे, या, अथवा, तथा, यथा, और आदि अनेक प्रकार के भावों का बोध कराने वाले अव्यय हैं। कुछ अव्ययों के आगे विभक्ति चिह्न भी आते हैं, जैसे— **अब से, तब से, यहाँ से, वहाँ से, सदा से** आदि। नियम के अनुसार अव्यय सदा पृथक् लिखे जाने चाहिए। जैसे— **आप ही के लिए, मुझ तक को, आपके साथ, गज़ भर कपड़ा, देश भर, रात भर, दिन भर, वह इतना भर** कर दे, मुझे जाने **तो** दो, काम **भी** नहीं बना, पचास रुपए **मात्र** आदि। सम्मानार्थक **'श्री' और 'जी'** अव्यय भी पृथक् लिखे जाएँ, जैसे— **श्री श्रीराम, कन्हैयालाल जी, महात्मा जी** आदि।

समस्त पदों में **प्रति, मात्र, यथा** आदि अव्यय पृथक् नहीं लिखे जाएँगे, जैसे— **प्रतिदिन, प्रतिशत, मानवमात्र, निमित्तमात्र, यथासमय, यथोचित** आदि। यह सर्वविदित नियम है कि समास होने पर समस्त पद एक माना जाता है। अतः उसे विभक्त रूप में न लिखकर एक साथ लिखना ही संगत है।

6) **श्रुतिमूलक 'य', 'व'**

क) जहाँ श्रुतिमूलक **य, व** का प्रयोग विकल्प से होता है, वहाँ न किया जाए, अर्थात् **किए-किये, नई-नयी, हुआ-हुवा** आदि में से पहले (स्वरात्मक) रूपों का ही प्रयोग किया जाए। यह नियम क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि सभी रूपों और स्थितियों में लागू माना जाए, जैसे— **दिखाए गए, राम के लिए, पुस्तक लिए हुए, नई दिल्ली** आदि।

ख) जहाँ **'य'** श्रुतिमूलक व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्व हो वहाँ वैकल्पिक श्रुतिमूलक स्वरात्मक परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है, जैसे— **स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व** आदि। यहाँ **स्थाई, अव्ययीभाव, दाइत्व** नहीं लिखा जाएगा।

7) **अनुस्वार तथा अनुनासिकता-चिह्न (चंद्रबिंदु)**

अनुस्वार (ं) और अनुनासिकता चिह्न (ँ) दोनों प्रचलित रहेंगे।

क) संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचमाक्षर के बाद सवर्गीय शेष चार वर्णों में से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण/लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए, जैसे— **गंगा, चंचल, ठंडा, संध्या, संपादक** आदि में पंचामाक्षर के बाद उसी वर्ग का वर्ण आगे आता है, अतः पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग होगा (**गङ्गा, चञ्चल, ठण्डा, सन्ध्या, सम्पादक** का नहीं)। यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए अथवा वही पंचमाक्षर दुबारा आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा, जैसे— **वाङ्मय, अन्य, अन्न, सम्मेलन, सम्मति, चिन्मय, उन्मुख** आदि। अतः **वांमय, अंय, अंन, संमेलन, संमति, चिंमय, उंमुख,** आदि रूप ग्राह्य नहीं हैं।

ख) चंद्रबिंदु के बिना प्रायः अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है, जैसे— **हंसः हँस, अंगनाः अँगना** आदि में। अतएव ऐसे भ्रम को दूर करने के लिए चंद्रबिंदु का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए। किंतु जहाँ (विशेषकर शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ) चंद्रबिंदु के प्रयोग से छपाई आदि में बहुत कठिनाई हो और चंद्रविंदु के स्थान पर बिंदु (अनुस्वार चिह्न) का प्रयोग किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न करे, वहाँ चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु के प्रयोग की छूट दी जा सकती है, जैसे— **नहीं, में मैं।** कविता आदि के प्रसंग में छंद की दृष्टि से चंद्रबिंदु का यथास्थान अवश्य प्रयोग किया जाए। इसी प्रकार छोटे बच्चों की प्रवेशिकाओं में जहाँ चंद्रबिंदु का उच्चारण सिखाना अभीष्ट हो, वहाँ उसका यथास्थान सर्वत्र प्रयोग किया जाए, जैसे— **कहाँ, हँसना, आँगन, सँवारना, मैं, में नहीं** आदि।

8) **विदेशी ध्वनियाँ**

क) अरबी-फ़ारसी या अंग्रेज़ी मूलक वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, हिंदी रूप में ही स्वीकार किए जा सकते हैं, जैसे— **कलम, किला, दाग** आदि (क़लम, क़िला, दाग़ नहीं)। पर जहाँ उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग अभीष्ट हो अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो वहाँ उनके हिंदी में प्रचलित रूपों में यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ, जैसे— खाना : ख़ाना, राज : राज़, हाइफन : हाइफ़न। सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि अरबी-फ़ारसी एवं अंग्रेज़ी की मुख्यतः पाँच ध्वनियाँ (क़, ग़, ख़, ज़, और फ़) हिंदी में आई हैं जिनमें से दो (क़ और ग़) तो हिंदी उच्चारण (क, ग,) में परिवर्तित हो गई हैं, एक (ख़) लगभग हिंदी 'ख' में खपने की प्रक्रिया में है और शेष दो (ज़, फ़) धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खोने/बनाए रखने के लिए संघर्षरत हैं।

ख) अंग्रेज़ी के जिन शब्दों में अर्धविवृत **'ओ'** ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके **शुद्ध** रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर **'आ'** की मात्रा (ा) के ऊपर अर्धचंद्र का प्रयोग किया जाए (ऑ, ॉ) जहाँ तक अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं से नए शब्द ग्रहण करने और उनके देवनागरी लिप्यंतरण का संबंध है, अगस्त-सितंबर, 1962 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा वैज्ञानिक शब्दावली पर आयोजित भाषाविदों की संगोष्ठी में अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के देवनागरी लिप्यंतरण के संबंध में की गई सिफ़ारिश उल्लेखनीय है। उसमें यह कहा गया है कि अंग्रेज़ी शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण इतना क्लिष्ट नहीं होना चाहिए कि उसके लिए वर्तमान देवनागरी वर्णों में अनेक नए संकेत-चिह्न लगाने पड़ें। अंग्रेज़ी शब्दों का देवनागरी लिप्यंतरण मानक अंग्रेज़ी उच्चारण के अधिक-से-अधिक निकट होना चाहिए। उसमें भारतीय शिक्षित समाज में प्रचलित उच्चारण संबंधी थोड़े-बहुत परिवर्तन किये जा सकते हैं। अन्य भाषाओं के शब्दों के संबंध में भी यही नियम लागू होना चाहिए।

ग) हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो-दो रूप बराबर चल रहे हैं। विद्वत्समाज में दोनों रूपों की एक-सी मान्यता है। फ़िलहाल इनकी एकरूपता आवश्यक नहीं समझी गई है। कुछ उदाहरण हैं—**गरदन/गर्दन, गरमी/गर्मी, बरफ़/बर्फ, बिलकुल/ बिल्कुल, सरदी/सर्दी, कुरसी/कुर्सी, भरती/भर्ती, फ़ुरसत/फ़ुर्सत, बरदाश्त/बर्दाश्त, वापिस/वापस, आखीर/आखिर, बरतन/बर्तन, दोबारा/दुबारा, दूकान/दुकान, बीमारी/बिमारी** आदि।

9) **हल् चिह्न**

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी में सामान्यतः संस्कृत रूप ही रखा जाए, परंतु जिन शब्दों के प्रयोग में हिंदी में हल् चिह्न लुप्त हो चुका है, उनमें उसको फिर से लगाने का यत्न न किया जाए, जैसे — **'महान'**, **'विद्वान'** आदि के **'न'** में। इसी तरह भगवान, श्रीमान के /न/ में और जगत के /त/ में हल लगाने की आवश्यकता नहीं है। हाँ यदि कहीं भगवन् श्रीमन शब्दों का प्रयोग हो तो हल् अवश्य लगाना चाहिए।

10) **स्वन-परिवर्तन**

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी में सामान्यतः संस्कृत रूप ही रखा जाए, परंतु जिन शब्दों के प्रयोग में हिंदी में हल् चिह्न **'उऋण' को 'उरिण'** में बदलना उचित नहीं होगा। इसी प्रकार **ग्रहीत, दृष्टव्य, प्रदर्शिनी, अत्याधिक, अनाधिकार** आदि अशुद्ध प्रयोग ग्राह्य नहीं हैं। इनके स्थान पर क्रमशः **गृहीत, द्रष्टव्य, प्रदर्शनी, अत्यधिक, अनधिकार** ही लिखना चाहिए। जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो गया है उसे न लिखने की छूट है, जैसे— अर्द्ध/अर्ध, उज्ज्वल/उज्वल, तत्त्व/तत्त्व आदि।

11) **विसर्ग**

संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे यदि तत्सम रूप में प्रयुक्त हों तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए, जैसे — **'दुःखानुभूति'** में। यदि उस शब्द के तद्भव रूप में विसर्ग का लोप हो चुका हो तो उस रूप में विसर्ग के बिना भी काम चल जाएगा, जैसे - **'दुख-सुख के साथी'।**

12) **'ऐ', 'औ' का प्रयोग**

हिंदी में **ऐ** (ै), **औ** (ौ) का प्रयोग दो प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए होता है। पहले प्रकार की ध्वनियाँ **'है', 'और'** आदि में हैं तथा दूसरे प्रकार की **'गवैया', 'कौवा'** आदि में। इन दोनों ही प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए इन्हीं चिह्नों (ऐ, ै ; औ, ौ) का प्रयोग किया जाए। 'गवय्या', 'कव्वा' आदि संशोधनों की आवश्यकता नहीं है।

13) **पूर्वकालिक प्रत्यय**

पूर्वकालिक प्रत्यय **'कर'** क्रिया से मिलाकर लिखा जाए, जैसे — मिलाकर , खा-पीकर, रो-रोकर आदि।

14) **अन्य नियम**

क) शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।

ख) फ़ुलस्टाप को छोड़ कर शेष विराम आदि चिह्न वही ग्रहण कर लिए जाएँ जो अंग्रेज़ी में प्रचलित हैं, यथा — (- — , ; ? ! : =)

(विसर्ग के चिह्न को ही कोलन का चिह्न मान लिया जाए)

ग) पूर्ण विराम के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग किया जाए।

15) श्रीमती, बधु शब्द गलत है - श्रीमती, बधू शब्द सही है।

1.7 अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास

1)

1)	सही	2)	गलत	3)	सही	4)	गलत
5)	सही	6)	गलत	7)	सही	8)	गलत
9)	गलत	10)	सही				

2)

1)	वर्ण	2)	देवनागरी	3)	ऊपर से नीचे की ओर
4)	एकरूपता	5)	की ध्वनियों		

3)

1)	ऐ	2)	छ	3)	श	4)	भ
5)	झ	6)	ण	7)	ं	8)	घ

4)

1)	दृश्य	2)	शाश्वत	3)	झंडा	4)	दिव्य
5)	चिह्न	6)	शक्ति	7)	भक्त	8)	गल्ला
9)	निबंध	10)	लक्ष्य				

5)

1)	पंडित	2)	सन्मार्ग	3)	कंचन	4)	संबंध
5)	सम्मान	6)	अन्नदाता				

6)

1)	पेड़	2)	भट्टी	3)	मच्छर	4)	ढिठाई
5)	लड़ाई	6)	रिक्शा	7)	सुरक्षा	8)	उद्देश्य
9)	निर्मल	10)	बुद्ध				

7)

1)	तीव्र	2)	दोनों सही हैं	3)	पत्थर	4)	मुर्गियाँ
5)	दोनों सही हैं	6)	शिक्षण	7)	घड़ियाँ	8)	दोनों सही हैं

अनुकार्य

1) क्या आप बता सकते हैं कि करता/कर्ता, बसता/बस्ता जैसे युग्मों में दोनों शब्द क्यों सही हैं? इसका उत्तर आप इन शब्दों की रचना में ढूँढ़ सकते हैं।

2) नीचे दिये गये शब्दों में पुराने वर्णों का प्रयोग किया गया है। मानक वर्णों का प्रयोग करते हुए उन्हें फिर से लिखिए।

पुराने वर्ण	मानक वर्ण	पुराने वर्ण	मानक वर्ण	पुराने वर्ण	मानक वर्ण
पक्का		पुण्य		निश्शब्द	
भक्त		राष्ट्र		क्षत्रिय	
पत्ता		कुष्ठ		लक्ष्य	
विद्या		पत्ता		अङ्क	
विद्वान		खान		गङ्गा	
उद्देश्य		मुख्य		चञ्चल	
दृष्टि		धान		सञ्जय	
उद्धार		ध्यान		पण्डित	
विह्वल		भाषा		घण्टा	
चिह्न		सभ्य		अन्न	
ब्रह्मा		छाला			
असह्य		अच्छा			
नाट्य		उच्चारण			
ड्योढ़ी		लड्डा			
पट्टा		झंडा			
इकट्ठा		झरना			
अड्डा		ग्वाल			
गट्ठा/गठ्ठा		विश्वास			
बिल्व		प्रश्न			
गौण		श्याम			